ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 9 | ISSUE - 2 | OCTOBER - 2022

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

भारतीय साहित्य में "रामकाव्य" की परंपरा

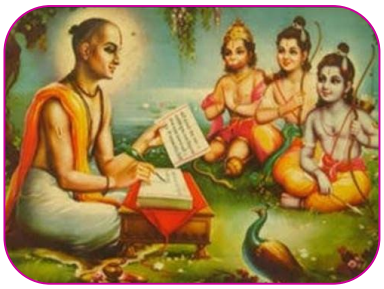

डॉ. श्रीधर पी डी

विभागाध्यक्ष्य – हिन्दी अध्ययन विभाग , क्रिस्तु जयन्ती कालेज, के. नारायणपुर , कोत्तनूर पोस्ट, बेंगलूरु.

भाषा एवं साहित्य इन दोनों विषयों का अध्ययन से सभी श्रोता एवं पाठक गण आत्मानन्द का अनुभव करते हैं। भारतीय संस्कृति में रामायण और महाभारत यह दोनों महाकाव्य जनमानस में इस प्रकार मिले हुए हैं, जिनको अलग रखकर अपनी संस्कृति की कल्पना ही नहीं कर सकते । मानव जीवन के हर एक घटना, संदर्भ और नीति का सूच्यार्थ इन दोनों महाकाव्यों में उपलब्ध होते हैं। भारतीय काव्य परंपरा में रामायण की कथा को ही अत्यंत प्राचीन और लोकप्रिय माना जाता है। रामायण भारत का सांस्कृतिक महाकाव्य है। रामकथा आख्यान बहु प्राचीन होने पर भी वाल्मीकि कृत 'रामायण' प्राचीनतम उपलब्ध रामकाव्य है। इसकी रचना काल के प्रति विविध मान्यताएँ हैं कुछ विद्वानों के संशोधन के आधार पर ईसा पूर्व चौथी सदी के अंत में इसकी रचना काल माना गया है। अनेक शताब्दियों से मौखिक रूप में रामायण की कथा प्रचलित चलती आ रही थी। काल क्रमानुसार रामायण की कथा में अनेक परिवर्तन देखे जा सकते हैं। इस रचना में चारित्रिक, साहित्यिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों की भरमार हैं। भारत के 'रामायण' और 'महाभारत' विश्व स्तर पर भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले 'महाकाव्य' हैं।

'रामचरितमानस' महाकाव्य में राम और रामायण की श्रेष्ठता बताते हुए तुलसीदास कहते हैं कि "राम नाम का मरम है आना। दशरथसुत तिहुं लोक बखाना।"[1] कालिदास कृत 'रघुवंश' में रामचरित्र के साथ अन्य रघुवंशीय राजाओं का भी चरित्रवर्णन करते हुए राम को इस महाकाव्य का प्रमुख नायक माना गया है। 6 वीं या 7 वीं सदी में 'भट्टी' द्वारा रचित 'रावणवध' को भट्टिकाव्य भी कहते हैं। 9 वीं सदी में 'कुमारदास' रचित 'जानकीहरण' में बालकांड से लेकर युद्धकांड तक रामायण की कथावस्तु का वर्णन है। वाल्मीकि रामायण को आधार बनाकर 36 सर्गों का 'अभिनंद' द्वारा रचित 'रामचरित' राम लक्ष्मण द्वारा कुंभ-निकुम्भ-वध तक की कथावस्तु का वर्णन है।[2]

रामकथा संबंधी नाटकों का अभिनय प्राचीन काल से चलती आ रही है। इस तरह राम चरित्र से संबन्धित महाकाव्य में रामायण की परंपरागत कथा का वर्णन हुआ है तो इन नाटकों में भी रामायण की कथावस्तु का परिवर्तन के साथ प्रस्तुति देख सकते हैं। कहीं-कहीं नवीन पात्रों की कल्पना कर प्रेक्षक के सामने रामायण को विशेष रूप में रुचि पूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है। इन नाटकों में 'भास' कवि द्वारा रचित रामायण के कथावस्तु वाला 'प्रतिमा नाटक' तथा 'अभिषेक नाटक' नामक दो रचनाएं उपलब्ध होते हैं। 'भवभूति' ने 'महावीर चरित' नामक सात अंकों का राम-सीता विवाह से लेकर राम अभिषेक तक की कथावस्तु को दर्शाते हुए एक नाटक की रचना की है। इस नाटक में प्रमुख कथा प्रस्तुतिकरण में राम के वीर और उग्र भाव को प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही इस रचना में श्रृंगार तथा करुणा रस के कोमल भावों को भी प्रस्तुत किया है। 9 वीं सदी में 'धीरनाग' कवि 'कुंदमाला' नामक नाटक की रचना करता है। इसमें श्रृंगार और वीर रसों को प्रमुख स्थान दिया है। इस नाटक में राम के प्रति रावण का द्वेष मुख्य विषय है। मुरारी कृत'अनर्घ राघव' में विश्वामित्र के आगमन से लेकर युद्ध कांड तक की कथावस्तु का वर्णन है। 10 वीं सदी में राजशेखर द्वारा लिखित 'बाल रामायण' सबसे विस्तृत रामायण संबंधी नाटक है। इस नाटक में सीता स्वयंवर से लेकर राम राज्याभिषेक तक समस्त कथावस्तु का वर्णन रुचिपूर्ण सुन्दरता के साथ किया गया है।

श्री परमानन्द स्वामी 'ये मेरे राम' ग्रंथ की प्रस्वावना में राम कथा की श्रेष्ठता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि "अवतार चरित्रों की कथा-प्रसंगों के वर्णन जब उनके प्रेम और अपनेपन से होते हैं तथा उन पर निरूपण के उनके अंत:करण को जानने के लिए होते हैं, तभी अपने अंत:करण की अवस्था उनके अंत:करण जैसे होगी और मानवी देह ईश्वरीय अनुभव का रहस्य हम जानने लगेंगे तथा स्वयं भी

महसूस करने लगेंगे।"[3] इस विश्लेषण में राम कथा का मानवीय संबन्धों के प्रति जागरूकता के साथ आत्मीयता, आदर्शता और नैतिक जीवन के प्रति उत्साह आदि विवरण देता है।

अनेक विद्वान 'रामायण' को वेद के समान गौरव कर प्रदान करते आए हैं। आधिकारिक तौर पर रामायण के रचयिता हम वाल्मीकि को ही मानते हैं। पर उससे पहले भी लोक साहित्य में या लोक परंपरा में रामायण के कथा के मूल वस्तु पाए जाते हैं। लोक साहित्य में निहित परंपरा से उपलब्ध कथावस्तु के तारों को ही जोड़कर वाल्मीकि ने रामायण की शास्त्रबद्ध रचना किया होगा। इसी प्रकार अन्य धर्मों के परंपरा एवं नीति नियमों के अनुकूल वैदिक, बौद्ध, जैनादि रामायण परिष्कृत होकर लिखे हुए होंगे। कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि आज हमारे सम्मुख उपलब्ध संपूर्ण रामायण की कथा लोक साहित्य परंपरा से जन्म लेकर शिक्षितों में बृहद आकार पाकर अपने पात्र और घटनाओं द्वारा हमारा मार्गदर्शन कर रहा है। महाकवि तुलसीदास अपने रामचरित मानस में राम की अनन्यता और विष्णु के अवतारों की भी सूचना को दर्शाते हुए कहते हैं कि "राम नाम नर केसरी कनकसिपु कलिकाल। जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल।"[4] इसका अर्थ है - राम नाम के प्रभाव में नरसिंह भी है और हिरण्यकशिपु भी है और जप करनेवाला प्रहलाद भी है। कोई भी हो त्रिकालों में भी राम ही हमारी रक्षा करेंगे।

वैदिक परंपरा से संबन्धित रामकथा या वैदिक रामायण के रचनाकार एवं रचना काल के प्रति विद्वानों में एक मत और स्पष्टता नहीं हैं। अनेक विद्वान वैदिक रामायण की रचना मूल को ईसा पूर्व6 वीं सदी में मानते हैं। जैन तीर्थंकर काल गणना के अनुसार वैदिक रामायण परंपरा को और भी पीछे से ले लिया जा सकता है। जैन तीर्थंकर परंपरा में अंतिम तीर्थंकर महावीर का काल ईसा पूर्व6 वीं सदी माना जाता है। उससे पूर्व 23 वां पार्श्वनाथ तीर्थंकर महावीर से भी 250 साल पूर्वज है। वह ईसा पूर्व 9 वीं सदी का होगा। उपरोक्त तीर्थंकरों से पूर्व 22 वां तीर्थंकर नेमिनाथ पार्श्वनाथ से 150 साल पूर्व रहा होगा। इस नेमिनाथ तीर्थंकर का संबंध महाभारत के प्रमुख पात्र श्री कृष्ण के चचेरा भाई का था - इस विचार को जैन और वैदिक दोनों परंपराएँ मानते हैं। उपरोक्त विषय को हम आधार माने तो तीर्थंकर नेमिनाथ का काल इसवीं सदी पूर्व 1100 वर्षों तक पीछे जाता है। महाभारत और नेमिनाथ के काल के बारे में स्पष्ट आधार प्राप्त नहीं है। फिर भी महाभारत का काल ही नेमिनाथ का काल मानने पर कोई आपत्ति नहीं आती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि तीर्थंकर नेमिनाथ का काल महाभारत का काल था और महाभारत से पूर्व में ही रामायण हुआ होगा। उपरोक्त विवरण से हम यह मान सकते हैं कि वैदिक रामायण के रचनाकाल ईसा पूर्व 1100 से पूर्व मान सकते हैं।

बौद्ध साहित्य परंपरा में राम और रामयण से संबंधित अनेक कथा तथा उपकथाएँ उपलब्ध हैं। 'दशरथ जातक', 'अनामिका जातक' और 'दशरथ कथानहं' नामक रचनाओं में राम का वर्णन देख सकते हैं। 'सामजातक', 'व्यसंतर जातक', 'संबुल जातक' आदि में रामायण के कथामूल को देख सकते हैं। कुछ विद्वान बौद्ध रामायण परंपरा को वाल्मीकि रामायण से भी पूर्व का मानकर अपने विचार प्रकट करते हैं। कुछ भी हो बौद्ध रामायण परंपरा के लिए लोक साहित्य ही मूल स्रोत रहा होगा। बौद्ध परंपरा के जातक रचनाएँ भी पहले श्रुत परंपरा में उपलब्ध थे, वे ही कालांतर में ईसा पूर्व 3 सदी तक लिपि बद्ध हो गए थे। पाली भाषा का 'जातक कथावण्णन' रामकथा का संक्षिप्त परिचय करा देता है। इसी कडी में 'अनामिक जातकं' ग्रंथ में रामायण के विविध कथाओं का वर्णन हुआ है। बौद्ध त्रिपीठकों में भी दशरथ-कथा के कुछ अंश उपलब्ध होते हैं।

जैन परंपरा में रामायण की कथा को महापुराण का एक भाग माना जाता है। रामायण के पात्र राम और लक्ष्मण और रावण के चरित्र जैन कवियों को विशेष रूप से आकर्षित किया था। इसी कारण जैन रामायण रचनाओं को विमलसूरी, संघदास और हरिषेण तथा गुणभद्र परंपरा नाम से तीन रूपों में देख सकते हैं। ईसा पूर्व तीसरी सदी में विमल सूरी ने प्राकृत भाषा का 'पउम चरिय' ग्रंथ की रचना की थी। इसको जैन रामायाणों में राम कथा से संबन्धित प्रथम उपलब्ध काव्य माना जाता है। इस काव्य में विमल सूरी अपने से पूर्व के महावीर, इंद्रभूति, गौतम, राहु, विजय आदि जैन साधुओं के श्रुत परंपरा द्वारा प्रचलित राम कथा के अंशों का उल्लेख किया है। स्वयं 'पउम चरियं' के रचनाकार के इस अभिप्राय को माने तो जैन रामायण का पूर्व इतिहास विमलसूरी से भी पूर्व देख सकते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जैन श्रुत परंपरा में रामायण अनादि काल से प्रचलित था। इसी परंपरा में रविषेण का 'पद्मपुराण', स्वयंभू का 'पउम चरिय', शीलाचार्य का 'चउप्पन्न महापुरिस चरियं' रामायण की रचनाओं को देख सकते हैं।

संघदास और हरिषेण परंपरा में वैदिक संप्रदाय के अभाव में रामायण की रचनाएं उपलब्ध हैं। विमल सूरी और संघदास संप्रदाय पर श्वेतांबर जैन परंपरा का भी प्रभाव था। गुणभद्र संप्रदाय दिगंबर जैन विचारधारा से प्रेरित था। इस विभिन्नता को हम उत्तर भारत का रामायण संप्रदाय और दक्षिण भारत का रामायण संप्रदाय के रूप में अलग करके देख सकते हैं। गुणभद्र दिगंबर जैन संप्रदाय के रामायण कथा के प्रणेता है। उत्तर पुराण में गुणभद्र रामकथा के 129 श्लोकों की रचना की है। इसी परंपरा में संस्कृत, अपभ्रंश और कन्नड़ इन तीनों भाषाओं में रामायण से संबंधित अनेक कृतियों की रचना हुई है। इनमें इसवीं सन्1331 में संस्कृत में रचित रामचंद्र मुमुक्षु का 'पुण्यास्रव' और 16 वीं सदी में कृष्णदास रचित 'पुण्यचन्द्रोदय पुराण' प्रमुख हैं। इसवीं सन् 965 में अपभ्रंश भाषा में पुष्पदंत ने 'महापुराण' की रचना

की। दसवी सदी में कन्नड़ भाषा में चवुंडराय रचित 'चावुंडराय पुराण में रामायण की कथावस्तु का उपयोग किया गया है। ई.वीं सन् 1200 में बंधुवर्म ने 'जीव संबोधने', 14 वीं सदी में नागराज ने 'पुण्यास्रव', ई.वीं सन् 1540 में देवप्प कवि ने 'रामविजयकाव्य' की रचना की थी। इस प्रकार गुणभद्र परंपरा में आरम्भ से 16 वीं सदी तक दक्षिण भारत में राम काव्य रचना कार्य निरंतर प्रचलित रहा।

रामायण में मनुष्य में मानवता का विकास किस प्रकार होना चाहिए इसी परिकल्पना को रखकर सुंदर, सुरुचिपूर्ण कथा सहित रचा गया। यह रामायण महाकाव्य सभी भाषाओं में, सभी प्रदेशों में, सबके मन को हित प्रदान कर, जनमानस में सार्वकालिक अनुकरणीय, नीतिपरक, आत्मीय महाकाव्य बना हुआ है। इसमें आनेवाले पात्र, संदर्भ और कथावस्तु अहर्निश जीवनोपयोगी हैं। यह रामायण एक धर्म के लिए सीमित नहीं है। भारत के सभी धर्म और अनेक भाषाओं के विद्वान् पंडित गण रामायण की कथा को अपनी-अपनी परंपरा और संदर्भ के अनुकूल परिवर्तन करते हुए अपने पाठकों के सम्मुख अपने विद्वत्पूर्ण कौशलों के साथ प्रस्तुत करते आ रहे हैं।

संस्कृति और धर्म के प्रभाव से प्रणीत भारतीय साहित्य परंपरा में जैन और बौद्ध अपने मत प्रचार और प्रसार के लिए एक ठोस कथा साहित्य को आधार बनाकर अपने धार्मिक प्रभावना करना चाहते थे। उस संदर्भ में सबके जनमानस में लोक रूढ़ी से रामायण की कथावस्तु उन सबको आकर्षित किया। रामायण में निहित मूल कथा को ही अपने धर्म और संस्कृति के अनुकूल मान्यतानुसार परिवर्तन कर भारत भर में अनेकों रामायणों की रचना की गई। रामायण में सबको मानवीयता का दर्शन होता है। श्रीराम मानव कुल के लिए मानवता का गंभीर और उत्तुंग शिखर समान जीवन की सार्थकता को सारे विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करने वाला पात्र है। इस महान चरित्र को "मर्यादा पुरुषोत्तम, उत्तम पुत्र, आदर्श पति, सच्चा मित्र, आदर्श भाई, आत्मीय राजा, धर्म का आराधक, विचार वान चक्रवर्ती, दीन-दलितों के प्रति आदर दिखाने वाला बंधु, सबके अनुकरणीय चरित्रवान व्यक्ति, त्याग से ही अमृत पदवी देने वाला सत्यवान ऐसे उपसर्गों और बिरुदावलीयों से राम चरित्र की सार्वकालिक पूजा होती आ रही है।"[5]

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी अपने साकेत महाकाव्य की रचना के मंगलाचरण से पहले कहते हैं कि "राम, तुम मानव हो? ईश्वर नहीं हो क्या? विश्व में रमे हुए नहीं सभी कहीं हो क्या? तब मैं निरीश्वर हूं ईश्वर क्षमा करें; तुम न रमो तो मन तुममें रमा करें।"[6] इस उक्ति में मैथिलीशरण गुप्त जी कहना चाहते हैं कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम विश्व के कण- कण में उपस्थित है। उसकी कल्पना करना असाध्य है। इसीलिए क्षमा करो मैं तुमसे मिला हुआ हूं और मैं सोचता हूं कि तुम भी मुझसे मिले हुए हो।

इसी रामायण में कुछ राक्षस गुणी पात्र भी हैं। इन पात्रों की दिशा, दशा और अंत देखा जाए तो हमारा व्यर्थ अहंकार अपने आप मिट जाता है। इन नकारात्मक गुणों को हम रावण, कुंभकरण, इंद्रजीत, मारीच, शूर्पणखा, खर दूषण आदि पात्रों में हम देख सकते हैं। इन्हीं के बीच राक्षस राजा और अपना बड़ा भाई रावण को ज्ञान देने वाला धर्मात्मा विभीषण भी है। स्त्री समाज के लिए आदर्श पात्र बनकर सीता का रामायण में मूल्यांकन किया गया है। पातिव्रत्य धर्म की परिपालन में अपना पति को ही सर्वस्व मानकर वही गति और वही मती तत्व में अपने पति को भगवान का स्थान देती है। सीता देवी का पतिव्रता धर्म का पालन करते हुए पवित्र चरित्र अपनाकर अंतिम विजय पाने वाली सीता का वर्णन किया गया है। महा ऋषियों को भी अप्राप्त भगवान श्री राम का अपूर्व दर्शन पाकर अपने चरित्र विवेक भक्ति और तपस्या से रावण को सही समय पर ज्ञान प्रदान करने वाली मंदोदरी का भी चित्रण है।

रामचरितमानस तथा रंगनाथ रामायण का तुलनात्मक अध्ययन और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस की प्रासंगिकता पर चर्चा की गई है। कन्नड़ भाषा की तोरवे रामायण पर विशेष जानकारी उपलब्ध होती है। नरेश मेहता कृत संशय की एक रात खण्डकाव्य में राम को आधुनिक संदर्भ में देखा गया है और रामायण में निहित मानवाधिकारों पर चर्चा की गई है। कन्नड़ साहित्य में अभिनवपंप कवि नागचन्द्र रचित जैन रामायण रामचन्द्र चरित पुराण में अहिंसा तत्वों श्रेष्ठता और विशेषताओं का अंकन किया गया है। मराठी संत एकनाथ के 'भावार्थ रामायण' और तुलसीदास की 'रामचरितमानस' की तुलनात्मक चर्चा की गई है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के 'राम की शक्ति पूजा' में राम को संघर्ष पूर्ण तपस्वी और साधक के रूप में चित्रित किया गया है। सिनेमा में चित्रित राम के आदर्शों केसाथ राम नाम पर जीविकोपार्जन पर भी चर्चा की गई है। भक्ति साहित्य में वर्णित सभी संत कवियों के राम भक्ति साम्य और वैशम्यों पर अनुसंधानात्मक विचार किया गया है। प्राचीन और अर्वाचीन सभी विद्वानों ने अपनी रचना में राम कथा, परंपरा, भक्ति, चरित्र, आदर्श विचार, नीति, उपदेश आदि सारगर्भित विचारों प्रस्तुत करते आ रहे हैं।

हिन्दी साहित्य के राम काव्यों में तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' का एक विशिष्ट स्थान ही है। तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस की श्रेष्ठता का विवरण देते हुए टीकाकर श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार अपने निवेदन में कहते हैं कि- "रामचरितमानस के जैसे सर्वांग सुंदर, उत्तम काव्य के लक्षणों से युक्त, साहित्य की सभी रसों का आस्वादन कराने वाला, काव्य कला की दृष्टि से सर्वोच्च तथा आदर्श गृहस्थ जीवन, आदर्श राजधर्म, आदर्श पारिवारिक जीवन, आदर्श पतिव्रत धर्म, आदर्श भ्रात्रुधर्म के साथ-साथ सर्वोच्च भक्ति, ज्ञान, त्याग, वैराग्य, सदाचार की शिक्षा देने वाला, स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्ध और युवा - सबके लिए समान उपयोगी एवं सर्वोपरि सगुण-साकार भगवान की आदर्श मानव लीला तथा उनके गुण, प्रभाव, रहस्य तथा प्रेम के गहन तत्वों को अत्यंत सरल, रोचक एवं ओजस्वी शब्दों में

व्यक्त करने वाला कोई दूसरा ग्रंथ हिंदी भाषा में ही नहीं, कदाचित् संसार की किसी भी भाषा में आज तक नहीं लिखा गया। यही कारण है कि जितने चाव से गरीब-अमीर, शिक्षित-अशिक्षित, गृहस्थ-सन्यासी, स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्ध सभी श्रेणी के लोग इस संत रत्न को पढ़ते हैं, उतने चाव से और किसी ग्रंथ को नहीं पढ़ते तथा भक्ति, ज्ञान, नीति, सदाचार का जितना प्रचार जनता में इस ग्रंथ से हुआ है, उतना कदाचित और किसी ग्रंथ में नहीं हुआ है।" 7

इस रामायण की कथावस्तु में लौकिक और पारलौकिक कार्यों की सिद्धि होती है इस रामायण की कथा पुस्तक का श्रद्धा पूर्वक पठन पाठन करने पर और इस ग्रंथ में निहित उपदेश और विचारों का मनन और अनुसरण करने पर साथ में आचरण में लाने पर मनुष्य को भगवत भक्ति का एहसास होकर जीवन में वह अपने पुरुषार्थ की साधन कर लेगा। इस ग्रंथ में सत्यम शिवम सुंदरम का त्रिवेणी संगम हुआ है। इसी ग्रंथ को आधार बनाकर भारतीय साहित्य परंपरा में अनेकों प्रकार के काव्य रचनाएं आधारित चलते आ रहे हैं। इस अलौकिक कथावस्तु के कारण ही भारतीय संस्कृति का नीव अटल रहा है।

आधार ग्रंथ :

1. तुलसी, संपादक उदयभानु सिंह, पृ.सं. 37
2. हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, डॉ. अमरनाथ, पृ. सं. 299
3. हे राम मेरे, श्री परमानन्द स्वामी, पृ. सं. 9
4. तुलसी दोहावली, संपादक राघव रघु, पृ. सं. 22
5. राम भक्ति में रसिक संप्रदाय, भगवती प्रसाद सिंह, पृ. सं. 45
6. साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन प्रकाशन, पृ. सं. 1
7. श्रीरामचरतिमानस सटीक, हनुमानप्रसाद पोद्दार, निवेदन, पृ. सं. 3